तब आचार्य भगवान ने कहा—तूने दुष्ट आचरण किया है। तुझे पता नहीं, ऐसे कुकर्मों से जो सुख होता है वह मीठा जहर पीने के समान है।

विषयनमहँ क्षणसुख जो भासै। कोटिन वर्ष नरकसोइ त्रासै
विन्ध्याचलबसि करुतप भारी। राम नाम दिन रैनि उचारी

विषयों में जो क्षणिक सुख मालुम होता है, उसके परिणाम में बहुत वर्षों तक नर्क यातना भोगनी पड़ती है अब तू विन्ध्याचल पर्वत पर जाकर तपस्या कर और अखण्ड राम नाम जप कर।

जनम जनम के पाप नशाई। करु वासना नाश दुख दाई
शीश नाय आयसु शिरधारी। बीनी विन्ध्याचलहिं सिधारी

तब तेरे जन्म-जन्म के पाप नष्ट होंगे। और भगवान की भक्ति करके मन की वासना दूरकर, यह वासना बहुत दुःख देती है। वीनी आज्ञा मानकर राम नाम जपती हुई विन्ध्याचल पर जाकर तप करने लगी।

विठ्ठल वेदान्ती गुण राशी। प्रभु दर्शन हित आये काशी
द्वै दिन लौं दर्शन नहिं पायो। सामवेद आरत स्वर गायो

एक श्रीविठ्ठल जी वेदान्ती आचार्य भगवान की महिमा सुनकर दर्शनार्थ काशी आये। उनको दो दिनों तक दर्शन नहीं मिला तब आर्त स्वर से सामवेद का गान करने लगे।

आरतधुनि सुनि दर्शन दीन्हों। विठ्ठलविप्र प्रश्न तब कीन्हों
रचि प्रपंच प्रभु कीन्ह प्रवेशा। सत एवं त्यक्त ह्वै हृदयेशा

आर्त्त ध्वनि सुनकर आचार्य भगवान ने दर्शन दिया। तब श्रीविठ्ठल पंडित ने प्रणाम करके प्रश्न किया कि—हे प्रभो! परमात्मा ने संसार को रच कर उसमें प्रवेश कैसे किया और सत्य तथा विनाशशील होकर सबके हृदय में साक्षी रूप से कैसे रहते हैं।

दो०—यह श्रुति ज्यों चिन्तन करौं, त्यों त्यों कुण्ठित बुद्धि ।
लक्षण देही देह के, समुझि न संशय शुद्धि ।।

इन वेद की ऋचाओं पर ज्यों-ज्यों विचार करता हूँ। त्यों-त्यों मेरी बुद्धि कुंठित होती जाती है। ऐसे शरीर के लक्षण तथा आत्मा के लक्षणों पर विचार करके भ्रम में पड़ रहा हूँ।

बोले प्रभु तुम बुद्धि बिगारी। पक्ष विपक्ष दोष गुण धारी
प्रियबुधि केर मोह तजि दीजै। सत्य तत्व उर अनुभव कीजै

आचार्य भगवान ने कहा—आपने पक्ष विपक्ष को लेकर गुण-दोष बुद्धि में रखकर बुद्धि को बिगाड़ डाला है। अपनी प्यारी बुद्धि का मोह त्याग कर सत्य तत्व का साधन करके अनुभव कीजिए।

निर्गुण ब्रह्म प्रकृति पर गावा। भक्त भक्तिबल सगुण बनावा
प्रभुलीलामय सृष्टि विकासा। श्रीभगवत भागवत विलासा

जो निर्गुण निराकार ब्रह्म था, उसे भक्तों ने भक्ति के बल से सगुण बना दिया। लीलामय भगवान की रचना यह संसार है। भक्त और भगवान का यह विनोद है।

जीवन फल सेवा हृदयेशा। मारुति शेष देत उपदेशा
देही देह वचन गति भेदा। अणु महान ज्यों वरणत वेदा

मनुष्यों के जीवन का फल भगवान की सेवा है ऐसा उपदेश अपने आचरण द्वारा श्रीहनुमान जी और शेषजी दे रहे हैं। देही और देह को धारण करने वाला जीव दोनों का भेद वाणी से कहा जाता है और जीव को अणु तथा ब्रह्म को महान वेदों में बताया गया है।

तर्कन्याय भ्रम जाल बिछाया। यह गौतम विद्या की माया
सुनि विट्ठल बोले कर जोरी। अवर एक शंका प्रभु मोरी

लौकिक तर्क और न्याय शास्त्र श्री गौतम ऋषि की विचित्र रचना है। ज्ञानी की दृष्टि में वह भ्रम जाल है। यह सुनकर श्रीविट्ठल जी ने हाथ जोड़ कर कहा—हे प्रभो ! एक शङ्का मेरी और है।

दो०—भ्रम दुखमय संसार यह, क्यों विरच्यो कर्तार।
हम सब जीवनकहँ दई, बंधन विपति अपार॥

यह सारा संसार जब भ्रम मय और दुःख मय है तो इसे ईश्वर ने बनाया ही क्यों ? हम सब जीवों को ऐसी विपत्ति और बन्धन में क्यों डाला ?

हँसि बोले यतिराज कृपाला। प्रलय भई जब पूरब काला
जीव सकल कर्मन भ्रम भोये। ब्रह्म विराट उदर गत सोये

यह सुनकर आचार्य भगवान ने हँस कर कहा—तो इसका रहस्य भी सुनो। जब पहले प्रलय हुई थी तब समस्त जीव विराट ब्रह्म के पेट में सो गये वे जीव कर्म आसक्ति से अनेकों स्वप्न देखते हुए बड़े दुःखी थे।

तब प्रभु दासीसम श्रुति आई। जीवनगतिनिरखतअकुलाई
बोलीं हे विराट भगवाना। जागहु जागहु कृपा निधाना

तब भगवान की दासी के समान वेद की ऋचायें मूर्तिमान होकर प्रभु को जगाने लगीं। जीवों की दशा देख दया वश वे सब व्याकुल हो रहीं थीं। वे बोलीं—हे विराट भगवान ! आप कृपा कर जागिये।

करहु सृष्टि सुन्दर सुखकारी। तजिनिद्रा निजनयनउघारी
जीव सकल सोवत अकुलाहीं। परे उदरगत स्वप्न भ्रमाहीं

और सुन्दर संसार की रचना कीजिए। निद्रा त्याग कर आँखें खोलिये। यह सब जीव सोते-सोते भी आपके उदर में भ्रमित होकर व्याकुल हो रहे है।

अति दुखपावत जीव विचारे। करहुसृष्टि सबहोंहि सुखारे
नर तन पाय कर्मशुभ करहीं। ज्ञानभक्ति उन्नतिकरि तरहीं

यह जीव बेचारे बड़ा कष्ट पा रहे हैं। इनके लिए संसार रच कर इन्हें सुखी कीजिये। यह मनुष्य का शरीर पाकर पुण्य करें तथा ज्ञान और भक्ति प्राप्त कर आत्मा की उन्नति करें और मुक्त होकर अक्षय आनन्द करें।

दो०—जागे सुनि विनती विशद, कीन्हीं सुन्दर सृष्टि।
जीवन के उद्धार हित, करी कृपा की वृष्टि॥

तब भगवान यह विनय सुन जागे और सुन्दर संसार की रचना की तथा जीवों के उद्धार के लिए कृपा की दृष्टि करके सब पदार्थ रचकर उन्नति के लिए सब व्यवस्था कर दी।

कोउ जीव तजि विमुखता, रघुपति सन्मुख होय।
प्रभु मानत निजश्रम सफल, जगरचना फल सोय॥

अब कोई भी जीव नास्तिक पन त्याग कर श्री रामजी की शरण में आता है तो भगवान संसार रचना कर अपने महान परिश्रम को सफल मानते हैं। जगत की रचना का यही उद्देश्य है कि जीव भगवान को प्राप्त कर अक्षय सुख मुक्ति पावे।

शरणागत जीवहिं निरखि, प्रमुदित होत कृपाल।
लेत मानि उपहार सम, जिमिनृपाल मणिमाल॥

भगवान शरणागत जीव को देखते ही प्रसन्न हो जाते हैं। वह उसके प्रेम को ही महान भेंट पूजा मान लेते हैं। जैसे कोई राजा को भेट में अनमोल मणियों की माला दे तो वह प्रसन्न होता है ऐसे प्रसन्न हो उठते हैं।

एक जीव जो ज्ञानि जन, हरि सन्मुख करि देत।
ते कौस्तुभमणि दान कर, फल प्रिय प्रभु सों लेत॥

कोई महात्मा यदि एक जीव को ज्ञान सिखा कर ईश्वर के सन्मुख कर देते हैं तो उन्हें कौस्तुभ मणि के दान का फल प्राप्त होता है।

जीवनहित यहसृष्टि विशाला । चलत अनादिचक्र सबकाला
पुनिपुनि सृष्टि प्रलयपुनि होई । आदि अन्त पावत नहिं कोई

यह विशाल संसार जीवों के कल्याण के लिये प्रभु ने बनाया है। यह अनादि सृष्टिचक्र सदा ही चलता रहता है। फिर प्रलय और फिर रचना होती है इसका कोई आदि अन्त नहीं है।

सकलकामतजिभजिसियरामहिं । पावतकोटिननर परधामहिं
सो साकेत धाम सुखराशी । प्रलयननाशलोकअविनाशी

हाँ संसार के स्वार्थ मय काम को छोड़ कर जो केवल श्रीसीता राम जी की उपासना करते हैं। वे प्राणी परम धाम को प्राप्त होते हैं। वह साकेत आनंद मय धाम है। प्रलय होने पर नाश नहीं होता, वहीं सदा सुख से रहा जा सकता है।

नित्यमुक्तजन जहाँ विराजहिं । पावतपरमअछ्यसुखसाजहिं
तहाँ सदा सुख सिन्धु समाना । त्रिभुवनसुख इकबिंदुबखाना

वहाँ नित्य मुक्त भक्त रहते हैं। अक्षय अविनाशी आनन्द मय प्रभु की लीला का आनन्द उन्हें मिलता है। वहाँ का आनन्द समुद्र के समान है। और सारा आनन्द एक बूँद के समान है।

तीन भाग साकेत विशाला । एकभाग त्रिभुवन जगजाला
सुनि विठ्ठलकर संशय भागा । बोले पगपरि भरि अनुरागा

और विशाल वैभव में यह साकेत तीन भाग तथा चौथाई भाग में सारा व्रह्माण्ड है यह सब रहस्य सुन कर कि—जीवों की उन्नति के लिए सृष्टि हुई तो श्रीविठ्ठल पण्डित का सारा सन्देह दूर हो गया। चरणों में पड़ कर प्रेम से बोले—

दो०—नाथ मोहिं विज्ञान कर, रहा अधिक अभिमान।
तब लौं ऊँचो ऊँट अति, जबलौं नहिं गिरिज्ञान ॥

हे नाथ ! मुझे अपने ज्ञान विज्ञान का बड़ा घमण्ड था किन्तु जैसे ऊँट पहाड़ के नीचे जब तक नहीं जाता तब तक वह समझता है कि मुझसे ऊँची कोई चीज नहीं होती।

राखहुशरण मंत्र मोहि दीजै । चरणन सों नहिं न्यारो कीजै
विनयमानि प्रभुदीक्षा दीन्हीं । दैफल सकल कृपाअति कीन्हीं

कृपा करके मुझे अपनी शरण में लेकर दीक्षा दीजिए और अब सदा सेवा में रख कर चरणों से अलग मत कीजिए। प्रार्थना स्वीकार कर दयालु आचार्य भगवान ने दीक्षा देकर सभी फल (मुक्ति - भक्ति) आदि दिये। पूर्ण कृपा करके—

भावानन्द नाम शुभ धारचो । बहुजीवन जिन्हपार उतारचो
सुनहुअपर इकचरित सुहावा । सुखदायक शुचि संतन गावा

इनका श्रीभावानन्द नाम रक्खा। इन भावानन्द जी ने अपने देश में जाकर भक्ति का प्रचार कर लाखों जीवों का कल्याण किया। इन्हीं के पुत्र विश्वविख्यात श्री ज्ञानदेवजी हुए जिन्होंने ज्ञानेश्वरी गीता बनाई। अब दूसरा चरित्र सुनिये—

एक जाट खेरी कर वासी। ताकर सुत सुन्दर गुणराशी
धन्ना नाम परम सुकुमारा। मनहुँ कुसुमशर कर अवतारा

एक खीरी जिले का रहने वाला जाट था। उसका पुत्र बड़ा ही सुन्दर तथा समस्त दिव्य गुणों से युक्त था। उसका नाम था—'धन्ना' वह ऐसा सुकुमार और मनोहर था मानो कामदेव का अवतार हो।

एक बार पण्डित इक आवा। प्रभु पूजनकरि भोग लगावा
धन्नानिरखि अतिहिअनुरागा। हठ करि मूरति माँगन लागा

उस ग्राम में एक ब्राह्मण तीर्थयात्रा करता हुआ आया। उसके पास धन्ना बालक खेलता हुआ जा पहुँचा। ब्राह्मण ने शालिग्राम भगवान को भोग